शोध मंथन Vol. XIV No.IV Oct.-Dec. 2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:shodhmanthan.anubooks.com*

सुनीता जैन के उपन्यासों में नारी अस्मिता

प्राप्तिः 20.10.2023
स्वीकृतः 20.12.2023

डॉ० राम पाण्डेय
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग
लालबहादुर शास्त्री स्मारक स्नातकोत्तर महाविद्यालय
आनन्दनगर, जनपद–महराजगंज
ईमेलः *drrampandey85@gmail.com*

81

सारांश

पद्मश्री सुनीता जैन हिन्दी कथा साहित्य की एक विशिष्ट लेखिका हैं। सुनीता जैन ने अपने उपन्यासों में दिखाया है कि स्त्री विभिन्न समस्याओं, अन्याय, शोषण व अत्याचार को झेलते हुए अपने अस्तित्व को सशक्त बनाए रखती है। नारी की लड़ाई पुरुष जगत् से न होकर अपनी पहचान बनाने की है। नारी अस्मिता का संबंध सर्वप्रथम नारी के सामाजिक अस्तित्व से है। वह हमेशा दूसरों के लिए जीती आई है। परन्तु अब वह स्व की अस्मिता को तलाशती हुई सामाजिक रूढ़ियों का बहिष्कार करती है। उसे समाज में विद्रोह का सामना भी करना पड़ता है। प्रस्तुत शोध पत्र में सुनीता जैन के उपन्यासों में नारी की इसी अस्मिता की लड़ाई को समझने की कोशिश की गई है।

मुख्य बिन्दु

अस्मिता, सामाजिक मूल्य , नैतिकता, आत्मश्लाघा, अस्तित्वबोध, आन्तरिक संघर्ष।

अस्मिता से अभिप्राय पहचान से है। स्त्री–पुरूष दोनों की अलग–अलग अपनी पहचान है। यदि दोनों में से किसी का अस्तित्व खतरे में होगा तो वह अपनी पहचान के लिए संघर्षरत होगा। रामचंद्र वर्मा द्वारा रचित 'संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागर' में ''अस्मिता शब्द से अभिप्राय, हक, दृष्टा और दर्शनशक्ति को एक मानना या पुरूष (आत्मा) और बुद्धि में अभेद मानने की भांति (योग) है।''[1] दूसरे अर्थो में इसको अहंकार, मोह और भ्रम से लिया गया है। भार्गव आदर्श हिन्दी शब्दकोश के अनुसार, ''अस्मिता का शाब्दिक अर्थ आत्मश्लाघा, अहंकार, मोह से माना गया है।''[2]

इस प्रकार अस्मिता के प्रति जागरूकता व्यक्ति को दिग्भ्रमित तथा दिशाहीन होने से बचाती है। राल्फ बाल्ड इमरसन के अनुसार, ''दुनिया में रहकर दुनिया की लीक पर चलना आसान है तो जंगल में रहकर मस्ती की जिन्दगी जीना अपनी पृथक अस्मिता को बनाए रखना भी। पर महान व्यक्ति वो हैं जो सबके बीच रहकर भी अपनी अस्मिता की स्वतंत्रता को अक्षुण्ण बनाए रखते हैं।''[3] अस्मिता में अपने निजत्व की सार्थकता को समझना ही व्यक्ति का बुनियादी सरोकार होता है। स्पष्ट है कि अस्मिता से अभिप्राय स्व की पहचान, अपने होने का बोध से है। आज पूरी दुनिया में अस्मिता का प्रश्न एक आंदोलन के रूप में चल रहा है। बात चाहे स्त्री की हो या फिर दलित या आदिवासी समाज की हो सभी अपनी अस्मिता के लिए लड़ाई लड़ रहे हैं।

नारी की स्थिति भले ही समय के प्रवाह में बदलती रही हो और उसकी छबि को दबाया या कुचला गया हो, परन्तु हर युग के निर्माण में उसकी भूमिका महत्वपूर्ण रही है। धर्म ग्रंथों में स्त्रियों

को आदिशक्ति के नाना रूपों में देखने की परंपरा हमारे यहां प्राचीन काल से ही रही है। ''नारी को गृहलक्ष्मी मानने वाले भारतीयों का विश्वास था कि वह उस घर को ही घर कहते हैं, जहां गृहिणी का निवास होता है। यह स्पष्ट है कि भारत वर्ष में नारी को सामाजिक जीवन में आरम्भ से ही बड़ा गौरव प्रदान किया गया था।''[4]

सुनीता जैन ने अपने उपन्यासों के माध्यम से नारी अस्मिता का चित्रण किया है कि किस तरह समाज में स्त्री ने विभिन्न समस्याओं, अन्याय, शोषण व अत्याचार को झेलते हुए भी अपने अस्तित्व को सशक्त किया है। नारी अस्मिता का संबंध सर्वप्रथम नारी के सामाजिक अस्तित्व से है। वह हमेशा दूसरों के लिए जीती आई है। परन्तु अब वह स्व की अस्मिता को तलाशती हुई सामाजिक रूढ़ियों का बहिष्कार करती है। उसे समाज के विद्रोह का सामना भी करना पड़ता है, किन्तु उसके इस सफर की सार्थकता इसी में है कि वह अपने अस्तित्व की पहचान के लिए इस विद्रोह का सामना करे तथा लेखिका के अनुसार भारतीय संस्कृति की मर्यादा में रहते हुए अपनी एक अलग भूमिका का निर्माण करे जो कि नारी विमर्श के क्षेत्र में दूसरों को भी एक रोशनी दिखा सके।

सुनीता जैन ने अपने उपन्यासों के माध्यम से नारी अस्मिता का चित्रण किया है। वह समाज में विभिन्न समस्याओं को झेलते हुए भी अपने अस्तित्व को बनाए रखती है। नारी की लड़ाई पुरूष जगत से न होकर अपनी पहचान बनाने की है। स्त्री समाज में अपनापन चाहती है और स्त्री–पुरुषों के सामाजिक संबंधों से ऊपर उठना चाहती है। वह हमेशा दूसरों के लिए जीती आई है, परन्तु इस बात को मान्यता तक नहीं दी जाती। इन सब स्थितियों का चित्रण सुनीता जैन के उपन्यासों में मिलता है। सुनीता जैन के उपन्यासों की स्त्रियां अपनी अस्मिता के लिए संघर्ष करती दिखाई देती हैं।

'बोज्यू' उपन्यास की कहानी मुक्ता और चन्द्रमोहन के प्रेम के इर्द–गिर्द घूमती है। मुक्ता कायस्थ और चंद्रमोहन पहाड़ी ब्राह्मण है। चंद्रमोहन की बहन तथा बहनोई दिल्ली में मुक्ता के घर में किरायेदार हैं। चंद्रमोहन अपनी बहन से मिलने दिल्ली आता है तो वहीं बहन के घर में मुक्ता से मुलाकात होती है। दोनों गहरे प्रेमपाश में आबद्ध हो जाते हैं। चन्द्रमोहन की बहन बोज्यू एक परंपरावादी और संस्कारशील स्त्री है। वह कभी घर के बाहर नहीं निकलती, घर के काम में ही व्यस्त रहती है। अपने भाई चंद्रमोहन और मुक्ता को आलिंगनबद्ध देखकर सन्न रह जाती है। क्योंकि बोज्यू जानती है कि उसके माता–पिता अपने संस्कारों में बहुत कट्टर हैं और वे मुक्ता को कभी बहू के रूप में स्वीकार नहीं करेंगें। इसलिए बोज्यू चाहती है कि मुक्ता और चंद्रमोहन भविष्य में कभी न मिलें। परन्तु चंद्रमोहन मुक्ता को शादी का आश्वासन भी दे देता है। किंतु मुक्ता चंद्रमोहन की पारिवारिक स्थितियों को देखकर अपने परिवार द्वारा तय किए गए रिश्ते को स्वीकार कर लेती है। अंत में चंद्रमोहन निराश होकर उच्च रिसर्च के लिए अमेरिका चला जाता है और रास्ते में विमान दुर्घटना में उसकी मृत्यु हो जाती है। उपन्यास में मुक्ता परंपराओं में बंधी हुई दिखाई देती है, लेकिन कहीं–कहीं परंपराओं का विद्रोह भी करती है। वह कहती है कि आज भी नई पीढी को स्वतंत्र निर्णय लेने की आजादी नहीं है, वह इन पुरानी परंपराओं को छोड़ने के लिए कहती है।

'सफर के साथी' उपन्यास की नायिका नीरजा स्विटजरलैण्ड में अपने पति सुकान्त के साथ रहती है, एक दुर्घटना में गर्भपात के आघात से वह मानसिक स्तर पर टूट जाती है और पानी की जहाज 'विक्टोरिया' से वापस भारत लौट रही है। इस सफर में नीरजा की भेंट धीरज मेहता नामक

व्यक्ति से होती है। नीरजा धीरज का साथ पाकर अपनी मनः स्थिति पर काबू पा लेती है। विभिन्न घटनाओं के माध्यम से नीरजा और धीरज की नजदीकियां बढ़तीं हैं परन्तु अंत में वे एक सुखद याद की अनुभूति के साथ प्लेटफार्म पर बिछड़ जाते हैं।

'बिन्दु' उपन्यास में एक ऐसी नारी का चित्रण है जिसमें जीवन जीने का उल्लास एवं अपरिमित जीवन्तता है। बिन्दु एक मजिस्ट्रेट की बेटी है। बिन्दु को अपनी माँ तथा भाई से प्यार नहीं मिला। पैदा होते ही भाई को खा जाने का आरोप लगाकर माँ ने कभी बिन्दु को गोद में नहीं उठाया और बड़ा भाई हमेशा पीटता ही रहा। यौवन का बसंत आने के बाद वह प्रेम भाव में बह जाती है लेकिन समाज ने उसे भी कुचल दिया। उसकी माँ बिन्दु का विवाह एक संपन्न व्यक्ति कृष्णकांत से कर देती है। किन्तु पति को जब उसके विवाह पूर्व प्रेम का पता चलता है तो वह उसे घर से निकाल देता है। इसके बाद बिन्दु अमेरिका चली जाती है और पढ़–लिखकर प्रोफेसर बन जाती है। पति द्वारा त्याग दिए जाने पर बिन्दु वहां रहकर सुविधाभोगी जीवन गुजार रही है। इसी बीच जब उसे पति की बीमारी का पता चलता है तो वह दुबारा उसी रूढ़िग्रस्त समाज में लौटने के लिए विवश होती है। अपने व्यक्तित्व का स्वयं निर्माण करने पर भी बिन्दु सामाजिक बंधनों से मुक्त नहीं हो पाती। भले ही उसने पाश्चात्य संस्कृति का अनुसरण किया था, लेकिन वह अपनी भारतीय संस्कृति की जड़ों को नहीं छोड़ पाती और वापस भारत आकर अपनी अस्मिता उजागर करती है।

सन् 1977 ई0 में प्रकाशित 'मरणातीत' उपन्यास की नायिका विधवा युवती गोमा है। गोमा की शादी राज से होती है लेकिन विवाह के कुछ समय बाद ही एअर क्रैश में उसकी मृत्यु हो जाती है। गोमा का पति एअर फोर्स में विमान चालक था। पति की मृत्यु के बाद एक पुत्र के अलावा गोमा का कोई सगा–संबंधी नहीं था। गोमा ने रिसेप्शनिष्ट की नौकरी भी की थी। यही नहीं एक कन्या महाविद्यालय में कार्य करना आरम्भ कर दिया। उसका एक उपन्यास भी प्रकाशित हो चुका है। गोमा एक अप्रकाशित उपन्यास की पाण्डुलिपि समालोचक जगदीश वर्मा को दिखाने उसके घर जाती है। जहां उसकी मुलाकात रीता से होती है जो वर्मा की पत्नी नहीं बल्कि प्रमिका होती है। वह विवाह पूर्व वर्मा से गहरे प्रणय संबंध रखती थी। लेकिन गोमा की स्थिति इसके विपरीत थी, वह अपने पति की स्मृति में स्वयं को होम कर रही थी और दूसरी तरफ रीता अपने पति और बच्चे होने के बावजूद भी अपने पूर्व प्रेमी से संबंध बनाए हुए है। गोमा अपनी संकीर्ण सीमाओं को तोड़ नहीं पाती। लेकिन उपन्यास के अंत में वर्मा का जीवन के प्रति अटूट विश्वास तथा प्रबल आकर्षण गोमा को समर्पणशील बनाता है। गोमा ऊबकर अपने घर करनाल आ जाती है। वहां का सारा वातावरण उसे शादी के लिए उकसाता है और वह अपने बच्चे को छोड़कर दरवाजे से बाहर निकल जाती है। वह समस्त बंधनों को काटकर जगदीश वर्मा को अपने जीवन में सहेज लेती है तथा अपने आप को जगदीश के यहां पाती है। अपने अतीत से मुक्त होकर शादी के लिए तैयार हो जाती है।[5]

हमारे हिन्दू समाज में हिन्दू विधवा को जिस तरह मृत पति की स्मृति में चिपकाया गया है, वह हिन्दू नारी के संस्कारों और चिन्तन में बहुत गहरा प्रभाव छोड़ गया है। लेकिन उपन्यास में गोमा के माध्यम से परंपरा का विद्रोह और हृदयपूर्वक बांधी गयी सीमाओं का प्रतिरोध इस लघु उपन्यास का चरम बिन्दु है।

सुनीता जैन का अंतिम उपन्यास 'अनुगूँज' है। उपन्यास की नायिका छवि का विकास एक सामान्य पारिवारिक लड़की के रूप में होता है। लेकिन अनमेल विचारों वाले व्यक्ति के साथ विवाह

उसके जीवन को एकाकी बना देता है। इसमें छवि और मदन के ठण्डे हो चुके संबंधों का वर्णन है। पति ताश खेलने में व्यस्त रहता है और पत्नी उपेक्षित अनुभव करती है। किन्तु भारती के घर आने से इसके संबधों मे नई करवट आती है। भारती एक लेखक है। मदन अचानक मुम्बई चला जाता है। भारती शादीशुदा है और उसकी पत्नी छवि तीर्थ यात्रा पर चलने का अनुरोध करती है। छवि और भारती की पत्नी के दृष्टिकोण में भारी अंतर है। भारती की पत्नी पुराने संस्कारों से बंधी हुई है, जबकि छवि आधुनिक संस्कारों की है। छवि की दृष्टि में प्रेम परंपरागत अथवा संस्कारबद्ध धारणा नहीं है। वह प्रेम के आदिम स्वरूप का निरूपण करती है जिसमें सहजता होती है। उसका मानना है कि प्रेम का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता।6 छवि का प्यासा मन पुरुष के प्रगाढ़ आलिंगन और अनन्य प्यार के लिए छटपटाता रहता है। अंत में एक क्षण ऐसा भी आता है जब छवि अपनी समस्त जड़ता तोड़कर भारती के प्रति समर्पित हो उठती है। अपने जीवन की वर्जनाओं को अधिक बर्दास्त नहीं कर पाती और भारती के सम्मुख अपनी वेदना को व्यक्त कर देती है। छवि और भारती के तिकोन में चौथा कोण जुड़ने लगता है, जो मणि है। लेकिन बाद में उसे ज्ञात होता है कि छवि को गर्भ का कैंसर है और वह भीतर तक फैल चुका है। मातृत्वहीनता नारी के जीवन को मरुस्थल में ढकेल देती है। छवि कैंसर के इलाज के लिए लंदन चली जाती है और इसी बिंदु पर उसके पति मदन में पश्चाताप की अनुभूति होती है तथा वह भी स्वीकार करता है कि वह सदा उसके अस्तित्व को ठुकराता रहा है।

सुनीता जैन ने इस उपन्यास में दाम्पत्य जीवन को चित्रित किया है। सुनीता जैन ने प्रत्येक पात्र को लेकर अलग–अलग अध्याय लिखा है। नारी के अस्तित्व को नकार कर संपूर्णता संभव नहीं है। पुरुष की पहचान भी नारी की अस्मिता से अपूर्ण है।

सच तो यह है कि अपने समय में बहुचर्चित सुनीता जैन के इन उपन्यासों में देश के तेजी से बदलते सामाजिक परिवेश में अनेक तरह से नारी जीवन के ऐसे पहलुओं को छुआ जिन पर तब तक कुछ नहीं लिखा गया था। अगर कहीं कुछ लिखा भी गया था तो केवल सांकेतिक मात्र ही लिखा गया था। आज पांच दशक बाद भी इन उपन्यासों के पात्र जीवन की सच्चाईयों से रूबरू कराते हैं। इतना ही नहीं आज के समय में जब अस्मिता की बात चारों तरफ हो रही है तो ऐसे में ये उपन्यास नारी अस्मिता के लिए मार्गदर्शक का काम करते हैं।

संदर्भ

1. वर्मा, रामचंद्र. (2013). संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागर. नागरी प्रचारिणीः दिल्ली. पृष्ठ **75.**
2. पाठक, पण्डित रामचंद्र. (1989). भार्गव आदर्श हिन्दी शब्दकोश. भार्गव बुक डिपोः वाराणसी. पृष्ठ **60.**
3. शर्मा, हरिवंशराय. (2001). साहित्यिक सुभाषित कोश. राजपाल एण्ड सन्सः दिल्ली. पृष्ठ **74.**
4. आलीस, वी०ए०. (1966). स्वातंत्र्य पूर्व हिन्दी महिला लेखिकाओं की कहानियों का अध्ययन. सूर्य भारती प्रकाशनः दिल्ली. पृष्ठ **42.**
5. यादव, उषा. (1999). हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना. राधाकृष्ण प्रकाशनः नई दिल्ली. पृष्ठ **104.**
6. कुमार, सरिता. (1983). महिला उपन्यासकारों के कथा साहित्य में प्रेम का स्वरूप निरूपण. राधाकृष्ण प्रकाशनः दिल्ली. पृष्ठ **52.**